दिनांक 16 जून, 2010 को सहारनपुर में आयोजित प्रभाकर सम्मान समारोह के लिये महामहिम श्री राज्यपाल का उद्बोधन।

——————————

देवियों और सज्जनों,

पद्मश्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के 104वीं जयन्ती पर आयोजित ''प्रभाकर सम्मान समारोह'' में मुझे आज यहाँ आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सबसे पहले मैं स्वर्गीय प्रभाकर जी को कृतज्ञतापूर्वक नमन करते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ।

पद्मश्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के जीवन कृत्तिव से आप सभी लोग भली–भांति परिचित ही हैं। निर्भीक पत्रकार, शैलीकार एवं

स्वतंत्रता सेनानी, श्री कन्हैया लाल जी का जन्म इसी सहारनपुर जिले के देवबन्द कस्बे में हुआ था। देवबन्द उत्तर भारत की अत्यन्त गौरवमीय नगरी है। इस स्थान का ऐतिहासिक महत्व भी है। सिद्धपीठ बाला सुन्दरी देवी मन्दिर तथा विश्व प्रसिद्ध इस्लामिक शिक्षा केन्द्र दारूल उलूम के वातावरण का मिश्रित समन्वित परिवेश देवबन्द की विशेषता है।

प्रभाकर जी उन विरले साधकों में है, जिन्हें साहित्य और पत्रकारिता में एक साथ महारत हासिल थी। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रभाकर जी ने जिन शैलियों का सृजन किया है, उसने उन्हें अन्य साहित्यकारों से कही अलग और विशिष्ट पहचान दिलायी है। प्रभाकर

जी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर स्वाधीनता आन्दोलन में पदार्पण किया। उनकी विशिष्ट पहचान तथा भाषा ज्ञान के कारण वे महात्मा गाँधी जी तथा पंडित नेहरू सहित अनेक बड़े नेताओं के सम्पर्क आये। स्वाधीनता आन्दोलन में उनके सृजनात्मक चिन्तन के कारण गाँधी जी उनसे बहुत प्रभावित रहे।

प्रभाकर जी साप्ताहिक ''विकास'' का सम्पादन भी करते थे, जिनके लेख भारतीय युवाओं को स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होने हेतु प्रेरित करते थे।

जहाँ प्रभाकर जी स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल होकर अपने संघर्ष और पत्रकारिता के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ते रहे

वहीं साहित्य उनकी पहली प्राथमिकता बना रहा। सन् 1947 में भारत की स्वाधीनता पर उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को पत्र लिखकर साहित्य की सेवा में लगे रहने का अपना संकल्प दोहराया एवं साहित्य साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाये रखा।

प्रभाकर जी के लिए पत्रकारिता एक धुन की तरह थी। वे पत्रकार के रूप में न कहीं बंधे और न कहीं बिके। वे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और गणेश शंकर विद्यार्थी की आदर्शोन्मुखी पत्रकारिता के अन्यतम् प्रतिनिधि माने जाते थे। पत्रकारिता के संबंध में उनका कहना था कि ''मेरी पत्रकारिता की मूल प्रवृत्ति है– वन्दनीय का वन्दन और वर्जनीय का वर्जन। मैं छोटी से छोटी अच्छाई को अपनी

कलम में उभारता हूँ और छोटी से छोटी बुराई को उधेड़ता हूँ। बिना यह देखे कि अच्छाई मेरे मित्र की है या मेरे विरोधी की और इसी तरह बुराई किसी साधारण आदमी की है या किसी ऐसे शक्तिशाली की जो मुझे लाभ या हानि पहुंचा सकता है।''

मानवतावादी विचारधारा के पोषक प्रभाकर जी ने धर्म को कभी भी मनुष्य से अलग करके नहीं देखा। उनका मानना था कि ''जीवन ही मेरे लिए धर्म रहा। इसलिये मैं धर्ममय होकर जिया यानि कर्ममय होकर। ईश्वरमय मैं नहीं हो पाया, पर मेरा जीवन मानवमय सदा बना रहा। ''

समाज के प्रति प्रभाकर जी के मन में कृतज्ञता का भाव था। राष्ट्र–निर्माण की चिन्ता उन्हें सदैव रहती थी। प्रत्येक कार्य व्यवस्थित रूप से ही करना वे पसन्द करते थे। सच तो यह है कि वे नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत, सरल और सहज व्यक्तित्व के धनी पुरूष थे। उनकी जीवन शैली का विचार था– ''सीधी चाल, सादा हाल, विश्वास की ढाल–बस, सुख ही सुख।''

प्रभाकर जी के कृतित्व के मूल्यांकन का आधार उनके द्वारा रचित ग्रंथो और पृष्ठों की वृहद संख्या को ही नहीं माना जा सकता। वे एक विशेष शैली के स्वामी थे। इस शैली में भी इतने भेदोपभेद कि जिसके कारण उन्हें ''शैलियों का शैलीकार'' कहा जाता था। जीवन

की लगभग आधी शताब्दी के दौरान रचित साहित्य एवं उनके बहुमुखी प्रेरक व्यक्तित्व के लिये मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट की मानद् उपाधि, भारतेन्दु पुरस्कार, गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, पराडकर पुरस्कार, महाराष्ट्र भारती पुरस्कार सहित अनेक सम्मान उन्हें प्राप्त हुए। सन् 1990 में उन्हें पदम्श्री सम्मान से नवाजा गया।

साहित्य समाज और संस्कृति के क्षेत्र में अपना अविस्मरणीय और उल्लेखनीय योगदान करके जो लोग संसार से चले जाते हैं, उनके जीवन मूल्य हमेशा हमारे बीच बने रहते हैं। उन जीवन मूल्यों से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है और हमारा दिशा–दर्शन होता है। उनके जीवन मूल्य हमारी राह बनाते हैं। प्रभाकर जी अपने रचनाओं के रूप

में आज भी हमारे बीच हैं और कल भी रहेंगे। उनकी रचनाएं पाठक के लिये जीवन का पाठ है तो संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा भी।

श्री कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर जैसे मिशनरी पत्रकारों ने जिन मूल्यों को नये आयाम दिये, व्यक्ति व समाज में उन्हें विकसित और प्रतिष्ठित करने वालों में एक सम्मानित नाम है पद्मश्री डा0 आलोक मेहता जी का, जिन्हें आज यहाँ आठवें शैलीकार प्रभाकर सम्मान समारोह से सम्मानित किया गया है। मैं इसके लिये श्री मेहता जी को अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

इस अवसर पर मैं कहना चाहूँगा कि योग्य लोगों को सम्मानित कर उन्हें गौरव प्रदान करना श्रेष्ठ सामाजिकता का निर्वाह करने के समान हैं। यह प्रयास सकारात्मक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है और प्रशंसनीय है। वास्तव में इस प्रकार के सम्मान से योग्य लोगों को सम्मानित करने से दोहरा लाभ प्राप्त होता है। एक तो जिनको सम्मान मिलता है, उनको और अच्छा कार्य लगनपूर्वक करने की प्रेरणा मिलती है एवं अन्य लोगों को भी जीवन में कुछ उत्कृष्ट करने की प्रेरणा मिलती है।

समाज एवं राष्ट्र की सेवा में समर्पित व्यक्तियों के सम्मान में मुझे राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त की कुछ पंक्तियां बरबस ही याद आ रही हैं–

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूंजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।।
अखण्ड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए जिये।।

मित्रों, मनुष्यता और जन–कल्याण की भावना के संचार के लिए हमें किसी विशेष परिस्थिति, क्रान्ति अथवा आन्दोलन की प्रतीक्षा नहीं करनी होती। सच पूछिये तो हम में से प्रत्येक व्यक्ति को दिन–प्रतिदिन के जीवन में किसी न किसी का हाथ थामने, उसे सहारा देने का अवसर मिलता है। वास्तविक मनुष्य वही होता है जिसमें दूसरों के लिए जीने का जज्बा होता है। वही सोच उसके व्यक्तित्व को विशालता प्रदान करती है। प्रत्येक व्यक्ति को समाज के प्रति अज्ञानमय अंधकार से बाहर निकल कर सामाजिक सरोकारों से सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए।

मेरा मानना है कि समाज के प्रति जागरूकता किसी भी नागरिक का एवं इसी भावना से हर पत्रकार का भी सबसे पहला कर्तव्य है। आज हम एक ऐसे ही पत्रकार को सम्मानित कर रहे हैं। उन्हें पुनः मेरी हार्दिक बधाई।

धन्यवाद–नमस्कार।